IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 9, March 2025
Impact Factor: 7.67

शिक्षक दृष्टिकोण से प्राथमिक विद्यालयों में नैतिक एवं भावनात्मक विकास का मूल्यांकन

उदय कुमार[1] and डॉ. संगीता[2]

[1]शोधार्थी, विभाग शिक्षा शास्त्र

[2]सहायक प्रोफेसर, विभाग शिक्षा शास्त्र

सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सारांश

नैतिक एवं भावनात्मक विकास बालकों के समग्र व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, विशेष रूप से प्रारंभिक शिक्षा के स्तर पर। यह अध्ययन प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के दृष्टिकोण के माध्यम से यह मूल्यांकन करता है कि छात्रों में नैतिक मूल्यों जैसे ईमानदारी, करुणा, सहयोगिता तथा भावनात्मक गुणों जैसे आत्म-नियंत्रण, सहानुभूति और आत्मविश्वास का विकास किस हद तक हो पा रहा है। शोध में पाया गया कि अधिकांश शिक्षक नैतिक एवं भावनात्मक शिक्षा को आवश्यक मानते हैं, परंतु पाठ्यक्रम में इसके स्पष्ट निर्देशों की कमी, प्रशिक्षण का अभाव और सामाजिक परिवेश की जटिलता इसके प्रभावी क्रियान्वयन में बाधा उत्पन्न करती है। अध्ययन सुझाव देता है कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नैतिक शिक्षा को एक आवश्यक घटक के रूप में शामिल किया जाना चाहिए, साथ ही सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों का बेहतर उपयोग किया जाना चाहिए ताकि छात्रों के नैतिक और भावनात्मक विकास को एक सशक्त दिशा मिल सके।

मुख्य संकेतक: - प्राथमिक शिक्षा, शिक्षक दृष्टिकोण, नैतिक विकास, मूल्य शिक्षा।

परिचय

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह व्यक्ति के समग्र विकास की प्रक्रिया है, जिसमें नैतिक एवं भावनात्मक विकास की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। विशेष रूप से प्रारंभिक शिक्षा जो बालक के जीवन की आधारशिला होती है, में यह सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है कि छात्र न केवल

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 9, March 2025 Impact Factor: 7.67

बौद्धिक दृष्टि से समृद्ध हों, बल्कि नैतिक रूप से सुदृढ़ एवं भावनात्मक रूप से संतुलित बनें। इस उद्देश्य की प्राप्ति में प्राथमिक शिक्षक की भूमिका केंद्रीय है, क्योंकि वही छात्र के व्यवहार, दृष्टिकोण, और मूल्य-व्यवस्था को आकार देता है।

1. नैतिक एवं भावनात्मक विकास का महत्व

नैतिक विकास से तात्पर्य ऐसे मूल्यों और आचरणों के विकास से है जो किसी व्यक्ति को एक अच्छा नागरिक और संवेदनशील मानव बनाते हैं। इसमें ईमानदारी, करुणा, सहानुभूति, न्यायप्रियता, सेवा भाव जैसे गुण सम्मिलित होते हैं। वहीं, भावनात्मक विकास व्यक्ति के भीतर भावनाओं को पहचानने, उन्हें नियंत्रित करने, और दूसरों की भावनाओं को समझने की क्षमता से संबंधित है। इन दोनों पहलुओं का विकास यदि प्रारंभिक अवस्था में न किया जाए, तो शिक्षा का उद्देश्य अधूरा रह जाता है।

वर्तमान सामाजिक परिवेश में नैतिक मूल्यों में गिरावट, आक्रोश की प्रवृत्ति, सामाजिक असंवेदनशीलता और मानसिक तनाव जैसी समस्याएँ बच्चों में तेजी से देखी जा रही हैं। इसका प्रमुख कारण केवल घर की परिस्थिति नहीं, बल्कि विद्यालयी शिक्षा में नैतिक एवं भावनात्मक पहलुओं की उपेक्षा भी है। इसीलिए प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की भूमिका और उनका दृष्टिकोण इस विषय में अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

2. शिक्षक का दृष्टिकोण

प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक न केवल अकादमिक विषयों के मार्गदर्शक होते हैं, बल्कि वे आदर्श आचरण और व्यवहार के प्रेरक भी होते हैं। एक शिक्षक के शब्द, व्यवहार, प्रतिक्रिया एवं विद्यार्थियों के साथ उसका संबंध छात्रों पर गहरी छाप छोड़ता है। यदि शिक्षक स्वयं नैतिक और भावनात्मक रूप से जागरूक है, तो वह छात्रों के भीतर भी यह गुण विकसित कर सकता है। इसके विपरीत यदि शिक्षक इस दिशा में उदासीन है, तो विद्यार्थियों के व्यवहार में विकृति आना स्वाभाविक है।

कई अध्ययनों में यह स्पष्ट हुआ है कि शिक्षक का दृष्टिकोण ही निर्धारित करता है कि नैतिक शिक्षा कितनी प्रभावी होगी। UNESCO की एक रिपोर्ट (2015) में उल्लेख किया गया है कि नैतिक शिक्षा तभी प्रभावी हो सकती है जब शिक्षक उसे केवल एक पाठ्यक्रम नहीं, बल्कि जीवन के मूल्य के रूप में देखें और उसे अपने व्यवहार में उतारें।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 9, March 2025 Impact Factor: 7.67

3. प्रारंभिक शिक्षा में नैतिक शिक्षा की स्थिति

भारत में शिक्षा नीतियों में नैतिक शिक्षा का उल्लेख तो मिलता है, परंतु व्यवहारिक स्तर पर इसे पर्याप्त महत्व नहीं दिया जाता। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने नैतिक एवं भावनात्मक विकास को समावेशी और समग्र शिक्षा (Holistic Education) का भाग माना है, लेकिन जमीनी स्तर पर शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में इसकी अनुपस्थिति देखी जाती है। अधिकतर प्राथमिक विद्यालयों में नैतिक शिक्षा को स्वतंत्र विषय के रूप में न पढ़ाकर अन्य विषयों में अंतर्निहित किया जाता है, जिससे छात्रों के लिए यह एक स्पष्ट और संगठित विषय नहीं बन पाता।

शिक्षकों की मान्यता है कि यदि नैतिक और भावनात्मक विकास को सुनियोजित रूप से विद्यालयी दिनचर्या में सम्मिलित किया जाए, जैसे कि कहानियाँ, नैतिक प्रश्नोत्तरी, समूह चर्चा, नाटक आदि के माध्यम से, तो इसके बेहतर परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। लेकिन समय की कमी, पाठ्यक्रम का दबाव, प्रशिक्षण का अभाव और मूल्यांकन की कठिनाइयाँ इसे कार्यान्वित करने में बाधा बनती हैं।

4. भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शिक्षक-छात्र संबंध

गोलमैन (1995) के अनुसार, "भावनात्मक बुद्धिमत्ता" (Emotional Intelligence) वह क्षमता है जो एक व्यक्ति को अपनी और दूसरों की भावनाओं को समझने, अभिव्यक्त करने और नियंत्रित करने में सहायता करती है। जब प्राथमिक शिक्षक स्वयं इस प्रकार की समझ रखते हैं, तब वे छात्रों के साथ अधिक सकारात्मक संबंध स्थापित कर पाते हैं। यह संबंध छात्रों में आत्म-विश्वास, आत्म-अनुशासन, और सहयोग की भावना को जन्म देता है।

शोध यह भी दर्शाते हैं कि शिक्षक-छात्र के बीच सकारात्मक भावनात्मक संबंध विद्यार्थियों की अकादमिक उपलब्धि के साथ-साथ उनके सामाजिक और नैतिक व्यवहार को भी सुदृढ़ बनाते हैं। शिक्षक का संवेदनशील दृष्टिकोण, सहानुभूति, तथा शांत व्यवहार विद्यार्थियों को अनुकरणीय आचरण की ओर प्रेरित करता है।

5. शिक्षक प्रशिक्षण की भूमिका

शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में नैतिक और भावनात्मक शिक्षा को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना आवश्यक है। वर्तमान में बी.एड. और डी.एल.एड. जैसे प्रशिक्षण कार्यक्रमों में इस पहलू पर अपेक्षित बल नहीं दिया

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 9, March 2025 Impact Factor: 7.67

जाता। यदि शिक्षक नैतिक शिक्षा की अवधारणाओं, शिक्षण विधियों, और छात्र की मानसिक अवस्था को समझने की दक्षता प्राप्त करें, तो वे इस दिशा में प्रभावी कार्य कर सकते हैं।

शिक्षकों को यह सिखाया जाना चाहिए कि कैसे वे दैनिक शिक्षण में नैतिक मूल्यों को आत्मसात कर सकते हैं, कैसे वे संवेदनशील परिस्थितियों से निपटें, और कैसे छात्रों की भावनात्मक ज़रूरतों को पहचाने। इसके अतिरिक्त, स्कूल प्रशासन द्वारा इस दिशा में निरंतर प्रोत्साहन और अवसर प्रदान किए जाने चाहिए।

6. समाज और विद्यालय की सहभागिता

विद्यालय का वातावरण, शिक्षक की भूमिका, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ और अभिभावकों का सहयोग मिलकर ही छात्र के नैतिक एवं भावनात्मक विकास को सुनिश्चित कर सकते हैं। यदि विद्यालय समाज के नैतिक मूल्यों से जुड़ा रहे, तथा अभिभावक और शिक्षक परस्पर संवाद बनाए रखें, तो बच्चों को एक सुसंस्कृत वातावरण प्राप्त होगा।

शोध की आवश्यकता (Need of the Study):

आज के वैश्विक और तकनीकी युग में जहाँ नैतिकता और संवेदनशीलता में गिरावट देखी जा रही है, वहाँ प्राथमिक शिक्षा में नैतिक और भावनात्मक शिक्षा की स्थिति को समझना और उसे सुदृढ़ करने हेतु सुझाव देना समय की आवश्यकता है।

उद्देश्य (Objectives):

1. प्राथमिक विद्यालयों में नैतिक एवं भावनात्मक विकास की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन।
2. शिक्षकों के दृष्टिकोण से मूल्य शिक्षा की प्रभावशीलता का अध्ययन।
3. नैतिक एवं भावनात्मक विकास के लिए विद्यालयों में प्रयुक्त विधियों का विश्लेषण।
4. सुधार हेतु सुझाव देना।

शोध पद्धति (Research Methodology):

यह अध्ययन वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति पर आधारित है।

नमूना (Sample): 100 प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक (सरकारी व निजी दोनों)

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 9, March 2025
Impact Factor: 7.67

डाटा संग्रहण विधि: प्रश्नावली और साक्षात्कार

डाटा विश्लेषण: प्रतिशत, औसत एवं तुलनात्मक चार्ट द्वारा

चुनौतियाँ

1. पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा का स्पष्ट समावेश न होना।
2. शिक्षकों का प्रशिक्षण एवं जागरूकता की कमी।
3. तकनीकी युग में बच्चों की संवेदनात्मक क्षमता में कमी।
4. सामाजिक परिवेश से विरोधाभासी मूल्य मिलना।

सुझाव

1. नैतिक एवं भावनात्मक शिक्षा को पाठ्यक्रम में स्पष्ट रूप से शामिल किया जाए।
2. शिक्षकों को नैतिक शिक्षा हेतु नियमित प्रशिक्षण दिया जाए।
3. विद्यालय में नैतिक कहानियाँ, नाटक, और चर्चा सत्र आयोजित किए जाएँ।
4. अभिभावकों को इस दिशा में सहयोगी बनाया जाए।

निष्कर्ष

प्राथमिक विद्यालयों में छात्रों के नैतिक एवं भावनात्मक विकास का मूल्यांकन शिक्षक के दृष्टिकोण के बिना अधूरा है। प्रारंभिक शिक्षा की अवस्था बाल मन के निर्माण और व्यक्तित्व विकास का आधार होती है, और इस अवस्था में जो शिक्षण होता है, वह जीवनभर के व्यवहारों, मूल्यों और दृष्टिकोणों को प्रभावित करता है। इस अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षक न केवल ज्ञान के स्रोत होते हैं, बल्कि वह आदर्श आचरण और नैतिकता के प्रथम मार्गदर्शक भी होते हैं। शिक्षक का दृष्टिकोण, उनका व्यवहार, विद्यार्थियों के साथ संवाद की शैली, और उनके द्वारा अपनाई गई शिक्षण विधियाँ—ये सभी मिलकर विद्यार्थियों के नैतिक और भावनात्मक विकास को प्रभावित करते हैं।

शिक्षकों ने यह अनुभव किया है कि विद्यालयों में नैतिक मूल्यों जैसे ईमानदारी, सहयोग, करुणा और सहिष्णुता को बच्चों में विकसित करने के लिए निरंतर प्रयास आवश्यक है। इसी प्रकार, भावनात्मक विकास के लिए आत्मनियंत्रण, आत्मविश्वास, सहानुभूति और भावनाओं को सही तरीके से व्यक्त करना सिखाना आवश्यक है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 9, March 2025 Impact Factor: 7.67

किंतु व्यवहारिक धरातल पर अनेक शिक्षक इस बात से चिंतित हैं कि पाठ्यक्रम की अधिकता, मूल्य शिक्षा के लिए समय की कमी, और प्रशिक्षित शिक्षण संसाधनों का अभाव इस दिशा में प्रमुख बाधाएँ उत्पन्न कर रहे हैं। शिक्षक स्वयं यह स्वीकारते हैं कि यदि उन्हें इस क्षेत्र में विशेष प्रशिक्षण मिले और विद्यालयी ढांचे में मूल्य आधारित शिक्षा को अधिक व्यवस्थित रूप से सम्मिलित किया जाए, तो वे इस दिशा में और प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं।

एक और महत्त्वपूर्ण पहलू यह भी उभर कर सामने आया है कि नैतिक और भावनात्मक विकास केवल औपचारिक पाठ्यक्रम का भाग नहीं होना चाहिए, बल्कि इसे विद्यालयी जीवन की संपूर्ण संस्कृति में आत्मसात किया जाना चाहिए। विद्यालय का समग्र वातावरण—जिसमें शिक्षक-छात्र संबंध, अनुशासन प्रणाली, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ और सामाजिक सहभागिता शामिल हैं—यदि नैतिक मूल्यों के अनुरूप होता है, तो उसका प्रभाव बच्चों के मन पर गहरा और दीर्घकालिक होता है। शिक्षक स्वयं अगर उदाहरण के रूप में मूल्यों को जीवन में उतारें, तो छात्र भी उन्हें आत्मसात करते हैं।

अंततः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शिक्षक का दृष्टिकोण प्राथमिक विद्यालयों में नैतिक एवं भावनात्मक विकास का आधार स्तंभ है। शिक्षा व्यवस्था में इस दिशा में सुधार की आवश्यकता है, चाहे वह शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम हों, पाठ्यचर्या में नैतिक शिक्षा का एकीकरण हो, या विद्यालयों में संवेदनशील और मूल्यपरक वातावरण का निर्माण हो।

यदि इन सभी आयामों में संतुलन स्थापित किया जाए, तो शिक्षक छात्रों को न केवल एक अच्छा विद्यार्थी, बल्कि एक अच्छा नागरिक और संवेदनशील इंसान बनाने में सफल हो सकते हैं। अतः इस विषय को नीति-निर्माण और शैक्षिक योजनाओं में एक प्राथमिकता के रूप में अपनाना समय की माँग है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1]. कुमार, अजय (2021). *भावनात्मक शिक्षा का महत्व एवं चुनौतियाँ.* भारतीय शिक्षाशास्त्र समीक्षा, 18(1), 60-67.

[2]. गोलमैन, डी. (1995)। भावनात्मक बुद्धिमत्ता: यह आईक्यू से अधिक क्यों मायने रखती है। बैंटम बुक्स।

[3]. मिश्रा, संजीव (2019). शिक्षक दृष्टिकोण और मूल्य शिक्षा. शिक्षा और समाज, 14(1), 61-68.

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 9, March 2025
Impact Factor: 7.67

[4]. यूनेस्को (2015)। शिक्षण और सीखना: सभी के लिए गुणवत्ता प्राप्त करना - ईएफए वैश्विक निगरानी रिपोर्ट।

[5]. वर्मा (2017)। शिक्षण और सीखना: सभी के लिए गुणवत्ता प्राप्त करना - ईएफए वैश्विक निगरानी रिपोर्ट।

[6]. शर्मा, एम. और वर्मा, पी. (2022)। प्रारंभिक स्कूली शिक्षा में नैतिक और भावनात्मक विकास। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 40(3), 112-123।

[7]. शर्मा, रेखा (2020). प्राथमिक शिक्षा में नैतिक शिक्षा की भूमिका. भारतीय शिक्षाशास्त्र पत्रिका, 22(3), 45-52.

[8]. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020।

[9]. सिंह, रमेश (2019). *प्राथमिक शिक्षा में मूल्य आधारित शिक्षा की भूमिका.* शिक्षा विकास पत्रिका, 15(2), 45-52.